**विसनि विञायो, पिर्तखि पूरन आतमा,**
**देही ज़ाणी पाण खे, फाहीअ फासायो,**
**विरले कंहिं गुरमुख खे, अनभइ में आयो**
**सामी समायो, जल पपोटो जल में**

*सामीजी कहते हैं कि विषयों ने, सांसारिक सुखों की कामना ने जीव (मनुष्य) को परमात्मा से विमुख कर दिया है। माया/अविद्या के कारण मनुष्य अपने सच्चे स्वरूप को पहचान नहीं पाता। परिणामतः वह 'देह'/शरीर ही मानते हुए स्वयं को सांसारिक बंधनों में बाँध लिया है। अपवाद रूप में ही विरले किसी मनुष्य ने इस बात को समझा होगा। अर्थात् ऐसा गुरुमुख व्यक्ति जो गुरु के उपदेशनुसार आचरण करने वाला है। उसको प्रतीति हुई है कि जैसे पानी का बुदबुदा ऊपर उठ कर फिर पानी में ही समा जाता है उसी प्रकार परमात्मा का यह अंश (जीवात्मा/मनुष्य) अंत में परमात्मा से ही मिल कर एक हो जाता है।*

देह अर्थात् शरीर आत्मा का आश्रय है। हमारी आत्मा देह में स्थित है। देह को 'अध्यात्म' भी कहा गया है। मनुष्य देह का अपना भी विशेष महत्व है। इस देह के कारण मनुष्य को अंतरात्मा के दर्शन हो सकते हैं। परन्तु देह को ही सब कुछ मानना और देह का अभिमान करना उचित नहीं है। दुर्भाग्यपूर्ण बात यह है कि जब से जीव/मनुष्य भगवान से अलग हुआ है, उसने शरीर को अपना घर मान लिया है। माया के वश होकर उसने अपने 'सच्चिदानंद' स्वरूप को भुला दिया है। इसी भ्रम के कारण उसे दारुण दुःख भोगने पड़ते हैं। विषयों में लिए हो जाने पर उसे परमात्मा का विस्मरण हो गया है। वह विषय-भोग रूपी मृगतृष्णा के पीछे दौड़ रहा है। सुख रूपी जल पाने के लिए। किन्तु उसे न सच्चा सुख-संतोष मिलता है और न ही श्री हरि के दर्शन! वस्तुतः उसने अपने उस शुद्ध अविनाशी, विकारहित सुखस्वरूप को ही छोड़ दिया है। उसने अज्ञानवश स्वयं ही अपनी कर्मरूपी रस्सी मजबूत कर ली है और अपने ही हाथों से मजबूत गाँठ लगा ली है अविद्या की। वह अपने ही कर्मजाल में फँस गया है। उससे छुटकारा पाने का एक ही मार्ग है सतगुरु की कृपा से अविद्या की गाँठ खोलना और श्रीहरि का, भगवान का नाम-स्मरण करना। अनन्य भाव से भगवान को भजना। सामी साहब भी यही बात समझाते हुए कहते हैं कि विरला कोई गुरुमुख जन होगा, जिसने यह बात समझ कर विषयों से अपना पिंड छुड़ाकर अपने स्वरूप से एकरूपता स्थापित कर परम आनंद की प्राप्ति की होगी।

■